दिनांक :- 29-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय वर्ष इतिहास
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
पत्र :- तृतीय
पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- तैपिंग विद्रोह

प्रारंभ में विदेशियों का विचार था कि तैपिंग सिद्धान्त ईसाई मत से लिए गये हैं, इसलिए तैपिंग शासन पश्चिम के व्यापारिक, ~~सामाजिक~~ सामाजिक तथा राजनीतिक सिद्धान्तों के अधिक निकट होगा। अतः यूरोपीय शक्तियों का तैपिंग विद्रोह के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण था। तैपिंग विद्रोहियों की सफलता के पश्चिम के व्यापारियों को यह विश्वास उत्पन्न हो रहा था कि तैपिंग विद्रोह उनके लिए चीन का द्वार खोलने की दैवी योजना है और मंचू राजवंश के पतन तथा चीन

से ईसाई गणराज्य के उदय का दैवी साधन है। परन्तु शीघ्र ही उनको अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ा। ब्रिटिश राजदूत फ्रेडरिक ब्रूस (Friedarik Bruce) ने 1861 में ब्रिटिश विदेश मंत्री लार्ड जॉन रसल को लिखा, शस्त्र तथा बारूद का क्रय करने के अतिरिक्त तैपिंग विद्रोहियों को किसी अन्य व्यापार मे रुचि नही है. मुझे इस विद्रोही सरकार से किसी सुखद परिणाम की कोई आशा नहीं है. निर्ममतया ग्राम व शहरों को जलाना एवं नष्ट भ्रष्ट करना इनकी दिनचर्या है। विदेशियों ने विद्रोहियों को अपना शत्रु समझा और मंचू सरकार से साँठ-गाँठ कर फौजी कार्यवाई कर उनका दमन किया। अतः तैपिंग विद्रोह की प्रकृति के अध्ययन से तीन बातें स्पष्ट होती है। प्रथम, यह मंचू विरोधी थी। द्वितीय यह विदेश-विरोधी थी एंव तृतीय यह नवोदित चीनी

राष्ट्रीयता की आवाज थी। विदेशी शक्तियों की मदद से चीनी प्रशासन ने विद्रोह का दमन कर दिया। परंतु विद्रोह की आत्मा जीवित रही। इसने चीन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन में अपनी अमिट छाप छोड़ दिया।

विद्रोह की विफलता :-

प्रसंगवंश यहाँ तैपिंग विद्रोह की विफलता का प्रमुख कारण

(1) विदेशी सेना है। जब 1853 में विदेशी बस्ती शंघाई का चीनी नगर विद्रोहियों के अधिकार में चला गया, तो विदेशियों पर प्रत्यक्ष खतरा उत्पन्न हो गया। फ्रेडरिक टी० वार्ड नामक एक अमरीकी ने शंघाई के ब्रिटिश अधिकारियों के विरोध के बावजूद एक दल खड़ा किया जो विद्रोहियों को खदेड़ने लगा। 1862 में उसके निधन के उपरान्त सी० जी० गार्डन नामक एक अँग्रेज अधिकारी की अधीनता में एक सतत विजयी सेना का संगठन किया गया।

फ्रांस, रूस तथा संयुक्त राज्य अमरीका की मदद से ब्रिटेन ने विद्रोह को कुचल दिया।

(2) नवीन धर्म :- तैपिंग विद्रोह का नायक हुंग-सिउ युआन था। उसने जिस नवीन धर्म का प्रवर्तन किया, उसके सिद्धान्त मुख्यतः ईसाई मत के लिए गए थे। साधारण जनता इन्हें शंका की दृष्टि से देखती थी। यह हुंग के नए धर्म को परम्परावादी ताओ या कन्फ्यूशियस के धार्मिक विचारों पर अध्यारोपण समझती थी। धार्मिक मान्यताओं या प्रवृत्ति को शीघ्र बदला नहीं जा सकता। परम्परावादी चीन के लोग हुंग को 'दैवी राजा' या उसके द्वारा स्थापित 'दैवी राज्य' को समझने से असफल रहे। यह ठीक है कि बीमारी के समय नहीं आए थे और वे हुंग के दिव्य दर्शन को शंका की दृष्टि से देखने लगे।

वस्तुतः हुंग कोई पैगम्बर या ईश्वर का अवतार नही था। उसने अपने को ईसा का छोटा भाई बतलाकर बड़ी भूल की। अतः उसका आन्दोलन विफल रहा।

(3) भ्रष्टाचार:- तैपिंग शासन की विफलता का एक अन्य कारण भ्रष्टाचार भी है। प्रारम्भ में हुंग तथा उसके अनुयायियों ने जनता में नैतिकता, शांति व व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया और इसमें वे सफल भी हुए। परंतु कालान्तरी में उनका उत्साह समाप्त हो गया। वे वैभव तथा विलासिता का जीवन व्यतीत करनेलगे। हुंग के हरम में 2000 सेविकाएँ थी जिनमें 64 को उसकी पटरानी होने का गौरव प्राप्त था। उसका व्यक्तित्व पदाधिकारियों द्वारा अलौकिक बना दिया गया तथा उसके चारों ओर नौकरशाही की एक दीवार बन गई। उसके आचरण का उसके अधिकारियों ने अनुकरण किया। इससे उनका

Scanned with CamScanner

शारीरिक और मानसिक क्षय हुआ। अपने आमोद प्रमोद के लिए उन्होंने जनता से अधिकाधिक धन प्राप्त करने का प्रयत्न किया। इससे जनता का कष्ट बढ़ गया और तैपिंग शासन अप्रिय हो गया।

(4) हुंग सिऊ-चुनान का निधन - मंचू सरकार, ब्रिटेन तथा फ्रांस आदि की संयुक्त सेनाओं का सामना करना तैपिंग विद्रोहियों के लिए सम्भव नहीं था। उनके संयुक्त अभियानों के फलस्वरूप विद्रोहियों की शक्ति नष्ट होती गई। दिसम्बर, 1863 में विद्रोहियों के सर्वाधिक शक्तिशाली गढ़ सूयाऊ का पतन हो गया। 1864 में राजधानी नानकिंग पर भी विदेशी सेना का अधिकार हो गया। इससे तैपिंग शक्ति का पूर्ण रूप से अन्त हो गया। फलतः घबड़ाकर वैवी राजा हुंग-सिऊ-चुनान ने आत्महत्या कर ली। इससे चीनी देशभक्त

नेतृत्वहीन हो गए! उनका उत्साह ठंडा पड़ गया।

(5) समर्थन का अभाव:- प्रारंभ में तो तैपिंग विद्रोहियों को बड़ा समर्थन मिला था। और उनके नेता हुंग के अनुयायियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई थी। किंतु कालान्तर में स्थिति बदल गई। तैपिंग प्रशासकों ने युवा, कर्मठ, प्रशिक्षित पदाधिकारियों की कमी पूरी करने के लिए किसी प्रशिक्षण संस्था की नींव नहीं डाली थी। उनकी व्यापार-विरोधी नीति के कारण व्यापार की हानि हुई। जो व्यापारी वर्ग इस आन्दोलन से सहानुभूति रखता था, वही अब उसका विरोधी बन गया। इसी तरह अपनी सुख-सुविधाओं के लिए जब तैपिंग प्रशासन ने जनता से धन ऐंठना शुरू किया तो उसके कष्ट बढ़ गए। वे भी उसके विरोधी बन गए। इस प्रकार, तैपिंग विद्रोह जिन महान् उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शुरू किया गया था, वे शीघ्र ही भुला दिए गए।

Scanned with CamScanner